तप करो

(ले० हीरानन्द ब्रह्मचारी, भगवद्भक्ति आश्रम)

मेरे प्यारे भाइयो यदि आप मुझ से प्रश्न करें कि संसार की शान्ति के लिए हिन्दु धर्म के उद्धार के लिए और अपनी आत्मा के कल्याण के लिए लोगों को क्या करना चाहिए तो मेरा विनय पूर्वक यह नम्र निवेदन होगा कि हम सब को तप करना चाहिए, कारण हिन्दु धर्मशास्त्र, वेदों से पुराणों तक इसी सिद्धान्त से भरपूर हैं । यह इतिहास की बात है यह आकस्मिक घटना नहीं है, यह ज्ञान है और सत्य ज्ञान है । यह ऐसा ज्ञान है जो अविच्छिन्न और अकाट्य है । यह ऐतिहासिक सत्य है । यह शक्ति है क्योंकि यह ज्ञान है । यह प्रत्यक्ष बात है इसमें सन्देह करने को स्थान ही नहीं है यह भूत और वर्तमान दोनों प्रमाणों से प्रमाणिक है फिर भविष्य तो इन दोनों के हाथ रहता ही है इसलिए इसके फल और सिद्धि में तो सन्देह ही नहीं । वेद को पढ़ जाइए उसमें आपको ऋषि मुनियों के तप की महिमा मिलेगी, देवताओं के तप का वर्णन मिलेगा, राक्षसों और असुरों के तप का जिकर पावेगा इतना ही नहीं स्वयं भगवान् के तप की भी महिमा मिलेगी । उत्तम अवस्था में, साधारण अवस्था में तप वांछनीय है और अत्यन्त निकृष्टावस्था में भी जब जब मनुष्य अत्यन्त हीन, दरिद्री, कायर और निराश हो गए हैं, भगवान ने ऋषि मुनियों द्वारा तप करने की आज्ञा दी है । जब यह मनुष्य संसार से दुःखी होकर भगवान की तरफ ध्यान करता है तो भगवान तप का ही संकेत करते हैं । यदि आपने उपनिषद्, महाभारत और अन्य ग्रन्थों का अवलोकन किया होगा तो आपको निश्चय हो गया होगा कि तप द्वारा सब कुछ हो सकता है । मैं आपका ध्यान संसार के वर्तमान विज्ञान विशारदों की तरफ आकर्षित करना चाहता हूं । उनके जीवन का ध्यान से अध्ययन कीजिए आपको उनकी उन्नति का एक मात्र रहस्य उनका तप ही मिलेगा । वेद भगवान कहते हैं विचार ही तप है फिर वही कहते हैं कि ज्ञान ही तप है । देखिए आधुनिक यूरोप इसी विचार और ज्ञान तप द्वारा ही संसार का स्वामी बन रहा है । अमेरिका के विज्ञान विशारद मिस्टर एडीसन के जीवन की तरफ ध्यान कीजिए कि वह कितना तपस्वी है । उसने सांसारिक भोगों को नाम मात्र रख कर अपना जीवन इतना तपस्वी बना लिया है कि जिस को सुन कर उसके प्रति आदर का भाव होता है । कहते हैं कि वह बड़े एकान्त स्थान में निवास करता है जहां चारों तरफ शान्ति छाई रहती है । कहते हैं कि वह इतना एकाग्रचित्त रहता है कि उसने अपने भोजन बनाने वाले को आज्ञा दे रक्खी है कि तुम मुझको भोजन के लिए कभी न बुलाया करो और उसकी यह आज्ञा है कि मेरे भवन में किसी प्रकार का शब्द या आहट नहीं होनी चाहिए । भोजन के लिए एक स्थान नियत किया हुआ है । रसोइया नियत समय पर भोजन वहाँ रख जाता है और फिर नियत समय पर वह उन बर्तनों को उठा कर ले जाता है और उनके स्थान में ताजा

भोजन रख जाता है । फिर कहते हैं कि वह तपस्वी एडीसन जब किसी नवीन अन्वेषण में लगा हुआ गूढ़ विचार में प्रविष्ट होता है तो तीन तीन दिन भोजन नहीं करता है, यह भी कहते हैं कि उसने एक बार तो सात दिन तक भोजन नहीं किया था । वह सात दिन तक बराबर एक ही विचार को विचारता रहा था । अन्त में विचार तप रूप होकर उसमें प्रकाश उत्पन्न हो गया जिससे उसने उस रहस्य को जिसकी उसको लालसा लगी हुई थी उस तप के प्रकाश में देखा जिस से उस को ज्ञान हो गया, कि अमुक सिद्धान्त अमुक प्रकार है । तप द्वारा वह तपस्वी संसार को क्या क्या पदार्थ प्रदान करता है ? यह तप का ज्वलन्त उदाहरण हमारे सामने है । इस को समाचार पत्र पढ़ने वाला जगत भले प्रकार जानता है ।

मैं तप सम्बन्धी कुछ अवतरण अपने शास्त्रों से उद्धृत करके आपकी भेंट करता हूं, और साथ ही निवेदन करता हूं कि यदि उन्नति की अभिलाषा है तो तप का इतिहास पढिये और तप का साधन कीजिए ! बिना तप किए हमारा उत्थान सम्भव नहीं है फिर अपने अनुभव के आधार पर यह भी बतलाए देता हूं कि तप का अवलम्ब करना आरम्भ ही में कठिन है आगे चलकर यह बड़ा कल्याणकारी व आनन्ददायक है परन्तु योग्य गुरु के मिल जाने पर तप करना बड़ा आसान है, गुरु अपने अनुभव और दया से इस प्रकार तप करा देते हैं जिस तरह माता बिल्कुल अज्ञानी बालक को प्रेमवश सब विघ्न बाधाओं से बचाते हुए पोषण कर देती है और उस की प्रसन्नता व आनन्द में कमी नहीं होने देती ।

तप कितने ही प्रकार के हैं परन्तु सबसे बड़ा तप विचार तप ही माना है कारण भगवान ने इस सृष्टि की रचना विचार तप द्वारा ही की है । श्रुति कहती है "सोकामयत । बहुस्यां प्रजायेयेति" ।

वह एक था उसने इच्छा की कि मैं बहुत हो जाऊं । "स तपो अतप्यत" । उसने तप किया । "स तपस्तप्त्वा इदं सर्वं असृजत यदिदं किञ्च" । उसने तप करके इस समस्त जगत की रचना की । इसी लिए कहा है "तपो मूलं सर्वं" । तप सब की जड़ है । तप अन्तःकरण की शुद्धि का कारण है अर्थात् तप से आत्मा के सब मैल कट कर आत्मा इस भान्ति शुद्ध पवित्र हो जाता है जैसे अग्नि में तपा हुआ सुवर्ण कुन्दन बन जाता है और आत्मा समस्त दुःखों से निवृइत्त हो जाता है । भगवान् मनु कहते हैं —

तपो मूलमिदं सर्वं दैवमानुषिके सुखम् ।
तपो मध्यैः बुधैः प्रोक्तं तपोऽन्तं वेद दर्शिभिः ॥

वेद दृष्टा ऋषि जिन्होंने ज्ञान को प्रत्यक्ष किया था कहते हैं कि देवताओं और मनुष्यों के समस्त सुख का मूल तप है और इस का आदि, मध्य और अन्त भी तप ही है । सुख की उत्पत्ति स्थिति और पूर्णता का एक मात्र कारण तप ही है । महाभारत में वेद व्यास जी ने ब्रह्मा जी के मुख से तप की महिमा वर्णन करवाई है ।

प्रजापतिरिदं सर्वं मनसैवासृजत प्रभुः ।
तथैव देवानृपयस्तपसा प्रेतिपेदिरे ॥

प्रभु प्रजापति ने मन के जोर से यह सब रचा है, इसी तरह ऋषि मुनि तप के प्रभाव से देवताओं के स्थान में पहुंचे हैं ।

तपसश्चानुपूर्व्येण फलमूलाशिनस्तथा ।
त्रैलोक्यं तपसा सिद्धा पश्यन्तीह समाहिताः ॥

इस प्रकार ही तप (संकल्प) के क्रम से फल, मूल आदि खाने वाले सिद्ध और समाधि लगाने वाले तप के बल से तीनों लोकों को देखते हैं ।

औषधान्यवदादीनि नाना विद्याश्च सर्वशः ।
तपसैव प्रसिद्ध्यन्ति तपो मूलं हि साधनम् ॥

औषधि, वनस्पति और सब प्रकार की विद्यायें तप के प्रभाव से प्रकट होती हैं क्योंकि सब की प्राप्ति का मूल साधन तप है ।

यद्दुरापं दुरानायं दुराधर्षं दुरन्वयम् ।
तत्सर्वं तपसा साध्यं तपो हि दुरतिक्रमम् ॥

जो दुःख से मिलता है, जो दुःख से सीखा जाता है जो दुःख से वश में रक्खा जाता है और जिसका अव्यय (सिलसिला) कठिन से मिलता है वह सब तप से सिद्ध किया जा सकता है क्योंकि तप को कोई नहीं लाँघ सकता ।

सुरापो ब्रह्महास्तेयो भ्रूणहा गुरुतल्पगः ।
तपसैव सुतप्तेन मुच्यते किल्बिषात्ततः ॥

मद्य पीने वाला, ब्रह्मज्ञानी का घातक, चोर, गर्भपात करने वाला, गुरु स्त्री के साथ गमन करने वाला, इन सब पापों से तप करने वाला मुक्त हो जाता है ।

मनुष्याः पितरो देवाः पशवो मृगपक्षिणः ।
यानि चान्यानि भूतानि त्रसानि स्थावराणि च ॥
तपः परायणा नित्यं सिद्ध्यन्ते तपसा सदा ॥

मनुष्य, पितर, देवता, पशु, मृग, पक्षी और स्थावर तथा दूसरे जो जंगम जीव हैं वे नित्य तप में तत्पर रहने पर तप के बल से सदा सिद्धि पाते हैं । इस प्रकार ही तप के बल से महामाया वाले देवता स्वर्ग में हैं भक्त शिरोमणि महात्मा तुलसिदासजी तप की महिमा इस प्रकार वर्ण करते हैं :—

तप बल तें जग सिरजैं विधाता ।
तप बल विष्णु भये परित्राता ॥
तप बल शम्भु करैं संहारा ।
तप बल शेष धरै भूभारा ॥
तप अधार सब सृष्टि भूवारा ।
तप ते अगम न कछु संसारा ॥

पार्वतिजी के तपोबल से निवृत्ति के अधिष्ठाता, सम्पूर्ण त्यागी महादेवजी का

विवाह बन्धन में पड़ना सबको ज्ञात है । तप के बल से मनुष्य प्रकृति पर विजय प्राप्त करके गुण, कर्म और स्वभाव को परिवर्तन करके नीच से उच्च वर्ण की प्राप्ति कर लेता है जैसे वेद व्यास जी का इतिहास है ।

कैवर्ति गर्भ सम्भूतो व्यासो नाम महा मुनिः ।
तपसा ब्राह्मणो जातः तस्माज्जातिकारणम् ॥

मल्लाह की लड़की से उत्पन्न हुआ व्यास नाम का महामुनि हुआ, जो तप से ब्राह्मण हुआ और वह जाति का कारण हुआ ।

तप के प्रभाव से विश्वामित्र महामुनि ने दूसरी सृष्टि की रचना की थी जिसकी यादगार में नारियल का वृक्ष अब तक वर्तमान है जो विश्वामित्र जी ने मनुष्य का शिर बनाया था, बाद में यही विश्वामित्र क्षत्री प्रकृति में उत्पन्न होते हुए भी तपके प्रभाव से ब्रह्मऋषि बनगए ।

क्षत्रिया गर्भ सम्भूतो विश्वामित्रो महामुनिः ॥

कपिलवस्तु के राजकुमार ने सात वर्ष घोर तपस्या करके बुद्ध भगवान की उपाधि पाई और एक बार संसार के विशेष भागको हिंसावृत्ति से मुक्त कर दिया था । हमारा समस्त इतिहास तपस्वी म्हात्माओं और तपस्वी बलशाली पुरुषों के इतिहासों से भरा पड़ा है । मैं पहले बतला चुका हूं कि इस समय भी जगत में जो विभूति दिखाई देती है वह सब तप का ही फल है । जिन मोटर, रेल, हवाई जहाज आदि में तुम आनन्द लेते फिरते हो यह उन विचारवान तपस्वी लोगों के तप का फल है जिनकी मज्जा विचार तप द्वारा शुष्क होगई है और जिन्होंने अपने मन को सब प्रकार की चंचलता से दूर करके एक ही विषय में लगा दिया है । जिस अन्न को खाकर हमारा अस्तित्व है, विचार कर देखो वह अन्न हमारा भाई किसान कितने कठिन तप से उत्पन्न करता है । जिस दूध की बनाई मिठाइयां हम बहुत स्वाद से भोगते हैं वह दुग्ध किसान लोग कितने तप से प्राप्त करते हैं । जिस जाति में तप जागृत रहता है वही जाति सुखी व उन्नत होती है और जिस जाति का तप नष्ट हो जाता है वह जाति भी नष्ट हो जाती है । भगवान कृष्ण ने गीता में तप की जैसी सुन्दर व्याख्या की है वैसी और कहीं देखने में नहीं आती । गीता में वर्णित तप प्रत्येक वर्ण और आश्रम द्वारा साधने योग्य है । वह इतना सुलभ और उत्तम है कि अत्यन्त गिरी हुई अवस्था में पहुंचा हुआ मनुष्य भी इस के द्वारा फिर उन्नत हो सकता है । वह फिर कभी पाठकगण की सेवा में उपस्थित करूंगा ।